

यत्राकर्त (यत्र + आ^०) n. *das beabsichtigte Ziel* TS. 5, 4, 10, 1.
यथस्वयि (यथा + स्वयि) adv. *je nach dem R̥shi* AIT. Br. 2, 4, 4, 26. ÂÇV. Çn. 3, 2, 7. — Vgl. यथार्थि.
यथर्चम् (von यथा + र्च) adv. *je nach der R̥k* LĀTJ. 7, 11, 9. DĀHJ. 7, 10, 26.
यथर्तु (यथा + र्तु) adv. *der jedesmaligen Zeit entsprechend* AIT. Br. 3, 9. KĀTJ. Çn. 22, 7, 15. KAUC. 74. PĀR. GRHJ. 1, 11. TAIRT. ÂR. 1, 9, 2.
पुष्पिता क्रुमाः R. 5, 73, 59.
यथर्तुक (wie eben) adj. *der Jahreszeit entsprechend* MBh. 1, 5005.
यथार्थि adv. = यथस्वयि KĀTJ. Çn. 4, 9, 1.
यथा (von 1. य) rel. adv. und conj. Einfluss auf den Ton des verbi finiti P. 8, 1, 36. fgg. KĀÇ. zu 36. 1) *wie* (einem तथा, एवम्, एव, तद्वत् entsprechend); tonlos nachgesetzt am Ende eines Pāda ÇĀNT. 4, 17. z. B. विशो यथा RV. 1, 23, 1. 30, 3. 2, 43, 3. 3, 43, 3. 8, 29, 6. 64, 5. ÇAT. Br. 11, 5, 5, 13. AV. 6, 14, 2. 3. doch auch betont: पिता पुत्रेभ्यो यथा RV. 7, 32, 26. 8, 46, 14. — नष्टं यथा पद्मम् RV. 1, 23, 13. तथा तद्वस्तु — यथा 30, 12. नूनं यथा पुरा 39, 7. यथेदं कूर्म्यं तथा 7, 33, 6. विष्वा हि ते यथा मनः 1, 170, 3. यथा देवानां जनिमानि वेदं 3, 4, 10. 7, 3, 7. क्रत्वा यथा वशतं 8, 33, 4. नैतावदन्ये मरुतो यथेमे श्वेतं 7, 87, 3. पर्शुर्यथा वनेम् 104, 21. AV. 1, 11, 6. 3, 9, 1. AIT. Br. 1, 23. ÇAT. Br. 1, 5, 1, 26. तडु किल तथैवास यथैवेनं प्रोवाच ÇĀNKH. Çn. 15, 16, 13. यत्परः पुंसा वा पत्नो स्याद्यथा वा *oder wie sonst* ÇAT. Br. 1, 3, 1, 21. यथा मे पुत्रो जायेत ÇĀNKH. Çn. 15, 18, 1. यथा हि RV. 8, 24, 9. यथा चित् 3, 23. 46, 21. 49, 7. 5, 36, 2. यथा ह् 4, 12, 6. — यथर्तुलिङ्गान्यतवः स्वयमेवर्तुपर्यये । स्वानि स्वान्यभिपश्यते तथा कर्माणि देहिः ॥ M. 1, 30. 119. यथा प्रूहस्तथैव सः 2, 126. यथा कृतयुगे तथा R. 1, 1, 90. एतत्सर्वं यथा वृत्तं तथा (so die ed. Bomb.) गावल्गने मम । घ्राच- ह्व MBh. 8, 47. यथा भवितव्यं तथा भवतु Hit. 18, 15. यथा तव तथा मम KATHĀS. 4, 33. (विलासवत्तयः) घनङ्गसंदीपनमाप्नु कुर्वते यथा प्रदाषाः श- शिचारुभूषणाः R̥T. 1, 12. यथा पुरा प्रकृतिभिर्न प्रत्यहं सेव्यते ÇĀK. 132. यदि यथा वदति नितितपस्तथा त्वमसि 123. धर्मात् न तथा सुगीतलज्जलैः स्नानम् — सुखपति — प्रीत्यै सज्जनभाषितं प्रभवति प्रायो यथा चेतसः Spr. 886. यथा — एवम् 2318. R. 1, 6, 19. यथा — तद्वत् SĀNKHJAK. 41. 38. Spr. 2301. fg. 2316. fg. 2326. यथा वदसि धर्मज्ञ तत्करिष्यामहे वयम् R. 1, 69, 14. एतदिच्छाम्यहं ज्ञातुं यथा यास्यामि तत्र वै MBh. 5, 6052. ब्रूयाच्चैनं कयात्ते त्वं पर्यादवचनं यथा *wie Parṇāda's Worte waren* 3, 2893. शृणु राजन्निहोत्पतिं शैनेपस्य यथा पुरा । यथा च भूरिश्चवसः 7, 6027. राज्ञ आ- वेदयद्यथा (= यथावत् Comm.) *wie es sich verhielt* Bhāg. P. 7, 8, 2. मंस्य- ते मां यथा नृपम् MBh. 4, 32. नवपल्लवसंस्तरे यथा रचयिष्यामि तनुं वि- भावसौ KUMĀRAS. 4, 34. विदधे कामान्यस्य यस्येप्सितान्यथा (vgl. यथोप्सित) R. 1, 53, 1. Bisweilen zum Ueberfluss mit इव verbunden: तत्र मेधाविनः केचिदर्थमन्यैरुदीरितम् । विचिन्तिपुर्यथा श्येना नभोगतमिवामिषम् ॥ MBh. 2, 1311. द्वेष्यो ऽपि संमतः शिष्टं शर्तस्येव यथौषधम् Spr. 4234. सारं ततो ग्रन्थमयास्य फल्गुं ह्यैर्यथा तीरमिवाम्बुमध्यात् 85. यथा — तथा *oder यथा — तेन सत्येन* bei Bethuerungen und festen Behauptungen *so ge- wiss — so wahr* N. 11, 36 (MBh. 2, 2399 यदि st. यथा). MBh. 3, 16867. 16871. fg. 2207. fgg. 2981. Daç. 2, 39. R. GORR. 2, 71, 23 (wo यथा ध्रुवं zu trennen ist). mit Verstellung der beiden advv.: यथा शास्त्वपते नान्यं वरं ध्यायामि कं च न । त्वामृते पुरुषव्याघ्र तथा मूर्धानमालभे ॥ MBh. 3, 5991. *quam, wie* als Ausruf der Verwunderung: यथा पचति शोभनम् P.

8, 1, 37, Sch. *wie, zum Beispiel* Nir. 1, 14, 7, 7. ÇĀNKH. Çn. 12, 13, 5. GOBH. 4, 4, 18. यथो एतत् *was das betrifft (dass)* Nir. 1, 14, 7, 7. यथैवेतत् AIT. Br. 7, 25. Bemerkenswerth sind folgende Verbindungen: a) यथा यथा (einem एवैव, तथा तथा entsprechend) *je nachdem, in welchem Maasse, je mehr*: यथा यथा पतयन्तो विपेमिर एवैव तस्युः सचितः सवार्पंते RV. 4, 54, 5. यथा यथा कृपयति 8, 39, 4. यथा यथा मृतयुः सति नृणाम् 10, 114, 1. 100, 4. यथा यथास्य अर्पणं तथा तथा TBR. 3, 6, 6. 4. M. 4, 20. 8, 285. यथा यथा मरुदुःखं द्रुपदं कुर्यात्तथा तथा 286. 10, 128. 11, 228. fg. 12, 73. MBh. 3, 2235. 16798. Spr. 2319. fg. 4788. fg. 5397. Suçr. 2, 442, 1. VARĀH. BRH. S. 11, 33. KATHĀS. 14, 63. Bhāg. P. 2, 2, 13. यथा यथा भर्ता तथा सक्- त्तेवचनानि वदति तथा तथाधिकं दुःखं भवति VET. in LA. (II) 20, 2. Vgl. यथायथम्. — b) यथा तथा *wie immer, wie es auch sei, auf irgend eine Weise, auf beliebige Weise* M. 4, 17. MBh. 2, 2139. 3, 3038. 13, 2748. HARIV. 4238. R. GORR. 2, 116, 48. 4, 17, 38. 5, 90, 30. VARĀH. BRH. S. 24, 28. 77, 25. KATHĀS. 34, 150. 62, 36. 117, 26. RĪGĀ-TAR. 3, 276. यथा तथा न तप्येयुः *auf keine Weise* R. GORR. 2, 21, 10. KATHĀS. 43, 108. 61, 169. अस्ति लोको ऽद्य नस्तत्तुः सो ऽपि नास्ति यथा तथा so v. a. *aber auch der ist genau genommen nicht da* MBh. 1, 1830. यथा तथा MBh. 3, 1168 so v. a. यथातथम्, *wie* INDR. 3, 52 *gelesen wird.* — c) यथा कथंचित् *auf irgend eine Weise, wie es sich gerade macht* M. 11, 220. MBh. 11, 772. MĀLAV. 41, 3. DAÇAK. in BENF. CHR. 182, 6. SARVADARÇANAS. 167, 18. fg. — d) तथ्यथा *dieses wie* so v. a. *nämlich, so zum Beispiel* KAUSH. ÇP. 3, 8. ÇĀK. 21, 7. Bhāg. P. 5, 3, 9. PĀNĀT. 3, 10, 7, 15. 136, 16. भवति च पुनर्भूया- न्भेदः फलं प्रति तथ्यथा प्रभवति शुचिर्विन्वोद्वाहे मणिर्न मृदा चयः UTTA- RAKĀMĀK. 27, 7 (33, 17). SARVADARÇANAS. 123, 8. 166, 17. — 2) = यथावत् *wie es sich gehört, richtig* Bhāg. P. 6, 1, 1. ऋ 3, 31, 14. 5, 3, 7. 18, 3. 8, 5, 19. 10, 87, 15. Vgl. यथाकृत. — 3) *ut, auf dass, damit, (so) dass*; mit opt. und conj., später auch fut., praes., imperf., perf. und aor.; gern dem ersten Worte des Satzes nachgestellt in der älteren Sprache. देवा नो यथा सद्मिदृधे ऋ- संन् RV. 1, 89, 1. 173, 9. सुभगो यथासंसि 2, 26, 2. यथा नो मित्रो ज्ञोपत् 3, 4, 6. यथा भवेम 7, 97, 2. पर्वो यथा नः 100, 2. VS. 2, 33. AV. 2, 28, 4. 3, 8, 2. न प्रमिये सवितुर्देव्यस्य तथ्यथा विद्यं भुवं धारिष्यति RV. 4, 34, 4. ÇAT. Br. 1, 7, 4, 5. 6, 4, 7. TBR. 3, 1, 4, 2, 11. यथा न रोदात् PĀR. GRHJ. 1, 5. यथा भूमिमास्यं प्राप्स्यतीति LĀTJ. 1, 7, 9. GOBH. 3, 7, 12. यथा भवाम्यु- त्तमः ÂÇV. GRHJ. 2, 10, 6. — तथा प्रयत्नमातिष्ठेयवात्मानं न पीडयेत् M. 7, 68. 128. 177. 180. 200. 9, 102. MBh. 1, 7699. 3, 1911. 2212. 2506. 2733. 2739. 2759. 4, 319. 5, 6035. R. 1, 2, 8. 8, 14. 37, 19. 69, 5. 2, 38, 16. fg. 46. 31. 3, 60, 23. 34. 4, 43, 67. 53, 26. Spr. 2113. KATHĀS. 13, 55. Bhāg. P. 6, 1, 64. PAT. zu P. 1, 1, 62. KĀÇ. zu P. 1, 1, 50. 56. यथा यथैव जीवेद्दि तत्कर्तव्य- महेलया Spr. 4790. मा भूत्कलात्पयो यथा R. 7, 107, 3. दमयन्तीसकाशे त्वां कथयिष्यामि नैषध । यथा तदन्यं पुरुषं न मां मंस्यति कार्द्विचि ॥ MBh. 3, 2092. आश्रमपीडा यथा न भविष्यति भवति v. l.) तथा प्रयतिष्यामहे ÇĀK. 18, 13. अथ तान् (तथैतान् ed. Bomb.) पातयिष्यामि यथा यास्यन्ति न तयम् MBh. 4, 35. R. 1, 60, 3. 4, 6, 4. 5. यथा न विद्मः क्रियते R. 1, 12, 3. 2, 93, 19. R. GORR. 2, 6, 28. 5, 37, 13. 76, 22. JĀÉN. 1, 343. ÇĀK. 24, 7. RAGH. 1, 72. 3, 66. KATHĀS. 18, 243. PRAB. 91, 3. क्रमेण च यथो तत्र प्रकर्षं स त- था यथा । अज्ञोयत न केनापि प्रतिमल्लेन भूतले ॥ KATHĀS. 23, 120. 52, 267. 348. 34, 222. 33, 23. ततस्तथा देवा तस्मै रत्नानि मगाधाधिपः । निर्दुग्धर-